संगोष्ठी में शामिल होने के इच्छुक अध्यापकों/शोधार्थियों हेतु निर्देशः–

1. संगोष्ठी में प्राध्यापकों/शोधार्थियों के पंजीकरण हेतु कुल 70 सीट उपलब्ध हैं।
2. 10 सर्वश्रेष्ठ शोध–पत्र के लेखकों को आने–जाने का थर्ड ए.सी.का किराया व मानदेय प्रदान किया जायेगा इसके अतिरिक्त वरीयताक्रम के 05 अन्य शोध पत्र लेखकों को स्लीपर क्लास का किराया व मानदेय प्रदान किया जायेगा।
3. शोध – पत्र दिनांक 27.11.2024 तक वर्ड और पीडीएफ फाइल में मेल आईडी – **pmusha.genderequality@gmail.com** पर भेजे जा सकते हैं।
4. संगोष्ठी के मूल विषय से सम्बंधित किसी भी विषय पर शोध पत्र आमंत्रित हैं।
5. शोध–पत्र न्यूनतम 2500 शब्द एवं अधिकतम 5000 शब्दों के मध्य हो।
6. शोध–पत्र हिन्दी में यूनिकोड फॉण्ट साईज 12 तथा अंग्रेजी में Time New Roman फॉण्ट साईज 12 में होने चाहिए। लेखक को शोध–पत्र के मौलिक एवं अप्रकाशित होने का स्वंय द्वारा प्रमाणित पत्र देना होगा।
7. शोध–पत्र में सन्दर्भ देते समय एक ही व्यवस्था का अनुपालन करें जैसे– तिवारी, रामचंद्रः हिन्दी का गद्य साहित्य, प्रथम संस्करण,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1955, पृष्ठ–110–111 ।

पंजीकरण लिंक– https://forms.gle/ExNggPtNbGrnVCMK9

वाट्सएप लिंक – https://chat.whatsapp.com/LurQYC87ML098EdSlG0qkq

मोबाईल नं.– 8120094808, 9718707063

पंजीकरण शुल्क – प्राध्यापक/शोधार्थी – रू.1000

शुल्क जमा करने हेतु विवरणः–

Name of Beneficiary -
Principal R.G. Govt. P.G. College Ambikapur
A/C No. - 50200022648884
IFSC : HDFC0000917
Branch : Namanakala, Ring Road, Ambikapur, Surguja

संरक्षक

श्री प्रसन्ना आर. (I.A.S)
सचिव, उच्च शिक्षा, छत्तीसगढ़ शासन

श्री जे.पी.पाठक (I.A.S)
आयुक्त उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

श्री जगदीश सोनकर (I.A.S)
मिशन डायरेक्टर रूसा, छत्तीसगढ़ शासन

प्रो.(डॉ.)रिजवान उल्ला
प्राचार्य एवं अपर संचालक,
उच्च शिक्षा, सरगुजा संभाग
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अम्बिकापुर, जिला सरगुजा (छ.ग.)
एवं
नोडल अधिकारी ' पीएम–उषा, जेंडर इन्क्लूशन एंड इक्वलिटी इनिशिएटिव'
जिला–सरगुजा (छ.ग.)

–:परामर्श मंडलः–

1.प्रो.वेणुगोपाल, सहायक संचालक, पीएम–उषा, रूसा कार्यालय, छ.ग. शासन,रायपुर।
2.श्री रणेंद्र, वरिष्ठ कथाकार एवं निदेशक, जनजाति अध्ययन केंद्र, रांची।
3.डॉ.एस.के. श्रीवास्तव, प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय, लखनपुर।
4.डॉ.जेवियर कुजूर, प्राचार्य, स्वामी आत्मानंद आदर्श शा.महाविद्यलाय, अम्बिकापुर।
5.डॉ.यू.पी. शर्मा, प्राचार्य, शा.राजमोहनी देवी कन्या महाविद्यालय, अम्बिकापुर।
6.सिस्टर शांता जोसेफ, प्राचार्य, होलीक्रास कन्या महिला महाविद्यालय, अम्बिकापुर।
7.डॉ.राजेश श्रीवास्तव, प्राचार्य, श्री साई बाबा महाविद्यालय, अम्बिकापुर।
8.डॉ.एस.के.टोप्पो, प्राचार्य, शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय,सीतापुर।
9.श्री बी.आर.भगत, प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय बतौली।
10.डॉ व्ही.पी.तिवारी, प्राचार्य, सरस्वती महाविद्यालय, अम्बिकापुर ।
11.सुश्री वंदना पाण्डेय, प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय उदयपुर।
12.डॉ. रीतेश वर्मा, प्राचार्य, के. आर. टेक्निकल कॉलेज, अम्बिकापुर।
13. श्री विनय कुमार सनमानी, प्राचार्य,शासकीय महाविद्यालय कमलेश्वरपुर,मैनपाट।
14.डॉ.अनिल कु. सिन्हा, आईक्यूएसी, को–आर्डिनेटर,रा.गां.पी.जी.कॉलेज, अम्बिकापुर।
15.डॉ.राजकमल मिश्रा, नियंत्रक, स्वशासी परीक्षा, रा.गां.पी.जी.कॉलेज, अम्बिकापुर।

–:आयोजन समितिः–

1. डॉ. दीपक सिंह , प्रभारी पीएम–उषा
2. श्री एस.ए.के.केरकेट्टा, सहायक प्राध्यापक, भूगर्भ–शास्त्र
3. डॉ.प्रदीप कुमार.एक्का, सहायक प्राध्यापक, समाज शास्त्र
4. डॉ.तृप्ति विश्वास, सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान
5. शम्पू तिर्की, सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य
6. डॉ.संगीता पाण्डेय, सहायक प्राध्यापक, गणित

संयोजक
डॉ.कामिनी

आयोजन सचिव
श्री विनीत कुमार गुप्त

तकनीकी सहयोग
श्री चेतन कुमार, सहा.प्राध्यापक
कु.मोनिका खेस, सहा. प्राध्यापक
श्री सर्वेश पाण्डेय

राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा (छ.ग.)

राष्ट्रीय सेमिनार

06–07 दिसम्बर 2024

'Role of Feminism in Gender Equality: Issues & Challenges'

'लैंगिक समानता में नारीवाद की भूमिकाः मुद्दे एवं चुनौतियॉं'

बीज–वक्तव्य

डॉ.शुभ्रा नगालिया
लैंगिक अध्ययन केन्द्र,
डॉ.बी.आर.अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली

(पीएम–उषा, जेंडर इन्क्लूशन एंड इक्वलिटी इनिशिएटिव योजनांतर्गत प्रायोजित)

–:आयोजकः–

पीएम–उषा
जिला समन्वयक केन्द्र
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा (छ.ग.)

महाविद्यालय एवं नगर का परिचय :–

राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, जिला–सरगुजा (छ.ग.) मुख्यालय में स्थित है। इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1960 में हुई थी। वर्तमान में इस महाविद्यालय में छह हजार से अधिक नियमित विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इस महाविद्यालय को यू.जी.सी. द्वारा स्वायत्तता प्राप्त है। वर्तमान में इस महाविद्यालय में 15 विषयों में शोध केन्द्र संचालित हैं। महाविद्यालय छत्तीसगढ़ के उन विशिष्ट महाविद्यालयों में शामिल हैं जहां सत्र 2022–23 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप पाठ्यक्रम संचालित हैं।

अम्बिकापुर नगर उत्तर छत्तीसगढ़ में शिक्षा एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण केन्द्र है। आदिवासी बहुल यह अंचल सुन्दर वनों, जल प्रपातों और दुर्लभ प्राकृतिक दृश्यों से भरा है। आदिवासी संस्कृति के विविध रंग यहॉ जीवंत रूप में विद्यमान हैं। यहीं के रामगिरी पर्वत से कालिदास के यक्ष ने मेघ को दूत बनाकर अपना प्रेम सन्देश भेजा था। इसी पर्वत की गोद में दुनिया की प्राचीनतम नाट्यशाला सीताबेंगरा की गुफाएं स्थित है। छत्तीसगढ़ का शिमला मैनपाट और प्रसिद्ध गर्म जलस्त्रोत तातापानी निकट ही स्थित है। अम्बिकापुर दिल्ली, रायपुर और जबलपुर से रेल सुविधा से जुड़ा है। वाराणसी, रांची, पटना, प्रयागराज, नागपुर और बिलासपुर से अम्बिकापुर के लिए सीधी बस सेवाएं हैं। रायपुर रांची एवं वाराणसी यहॉ से निकटस्थ हवाई अड्डे हैं।

विषय परिचय :–

वर्तमान समय में लैंगिक समानता एक गंभीर विमर्श के रूप में उपस्थित है। नारीवादी आंदोलनों ने समय–समय पर स्त्री–अधिकारों के लिए अपनी आवाज बुलंद की है। अगर हम नारीवाद के इतिहास को देखें तो आज तक उसने कई महत्वपूर्ण और असम्भव लक्ष्य प्राप्त किये है।नागरिक अधिकारों की मांग से शुरू हुआ यह आन्दोलन आज पितृसत्ता के विविध स्वरूपों से निरंतर टकराहट की अवस्था में हैं यह देखना भी दिलचस्प है कि किसी भी समाज में लैंगिक असमानता के कई स्तर मौजूद होते हैं। ऐसे में लैंगिक समानता की कोई एक परिभाषा या कोई एक मानक तय करना बेमानी होगा। पूरी मानव जाति को स्त्री और पुरूष के दो खांचों में बॉट कर देखना अपने आप में लैंगिक असमानता का उदाहरण है। नारीवाद ने अपने दायरे को बढ़ाते हुए उसमें इस तरह के किसी भी विभाजन से इतर मानवगत पहचान को रेखांकित करने की बात की है इसीलिए लैंगिक समानता में उसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई पड़ती है।

नारीवाद ने समाज में महिलाओं के प्रति मौजूद भेदभाव को उजागर किया और विभिन्न अधिकारों के लिए आवाज उठाई। इसने महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, प्रतिनिधित्व, मतदान और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे बुनियादी अधिकारों के लिए संघर्ष करने का रास्ता दिखाया। इसके अलावा, नारीवाद ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा, यौन शोषण और उत्पीड़न के मामलों को सामने लाने और इन पर कानून बनाने की दिशा में भी काम किया है।

नारीवाद ने यह भी सुनिश्चित किया कि लैंगिक समानता केवल कानूनी और संस्थागत स्तर पर न हो, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महिलाओं को समान दर्जा मिले। इसने महिलाओं के अधिकारों को विस्तार से परिभाषित किया और यह सुनिश्चित किया कि वे किसी भी प्रकार के भेदभाव, शोषण, और उत्पीड़न से मुक्त हो सकें, लेकिन समानता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अभी हमारे समाज को लम्बी दूरी तय करनी है। दलित, आदिवासी तथा अन्य हाशिये के समाजों में लैंगिक विमर्श का स्वरूप और कार्यरूप में इसकी परिणति की रणनीति क्या होगी? यह अभी एक अनुत्तरित सवाल है। इस सेमिनार का उद्देश्य इन्हीं अनुत्तरित प्रश्नों के संभावित उत्तरों की खोज करना है।

उपविषय :–

1. नारीवाद का इतिहास
2. पितृसत्ता के विविध स्वरूप
3. स्त्री–संघर्ष का इतिहास
4. भारत में स्त्री–आन्दोलन
5. नारीवाद की विविध धाराएॅ
6. विवाह, परिवार और पितृसत्ता
7. आदिवासी जीवन और पितृसत्ता का स्वरूप
8. पर्यावरण और स्त्री
9. जल, जंगल, जमीन के साथ स्त्री संघर्ष का स्वरूप
10. बाजार और स्त्री
11. दलित स्त्री संघर्ष का इतिहास
12. दलित स्त्रीवाद
13. भारतीय सिनेमा में लैंगिक समानता
14. साहित्य में लैंगिक समानता
15. हिन्दी साहित्य में स्त्री–संघर्ष की अभिव्यक्ति
16. भारतीय ज्ञान परम्परा में लैंगिक समानता
17. राजनीति और स्त्री
18. लैंगिक समानता में विधिक संरक्षण की भूमिका
19. लैंगिक समानता की अवधारणा एवं तृतीय लिंग
20. भू–अधिकार एवं लैंगिक समानता